इतिहास का पद्यों में रूपांतरण

भाग-2

रघुवंश मिश्रा

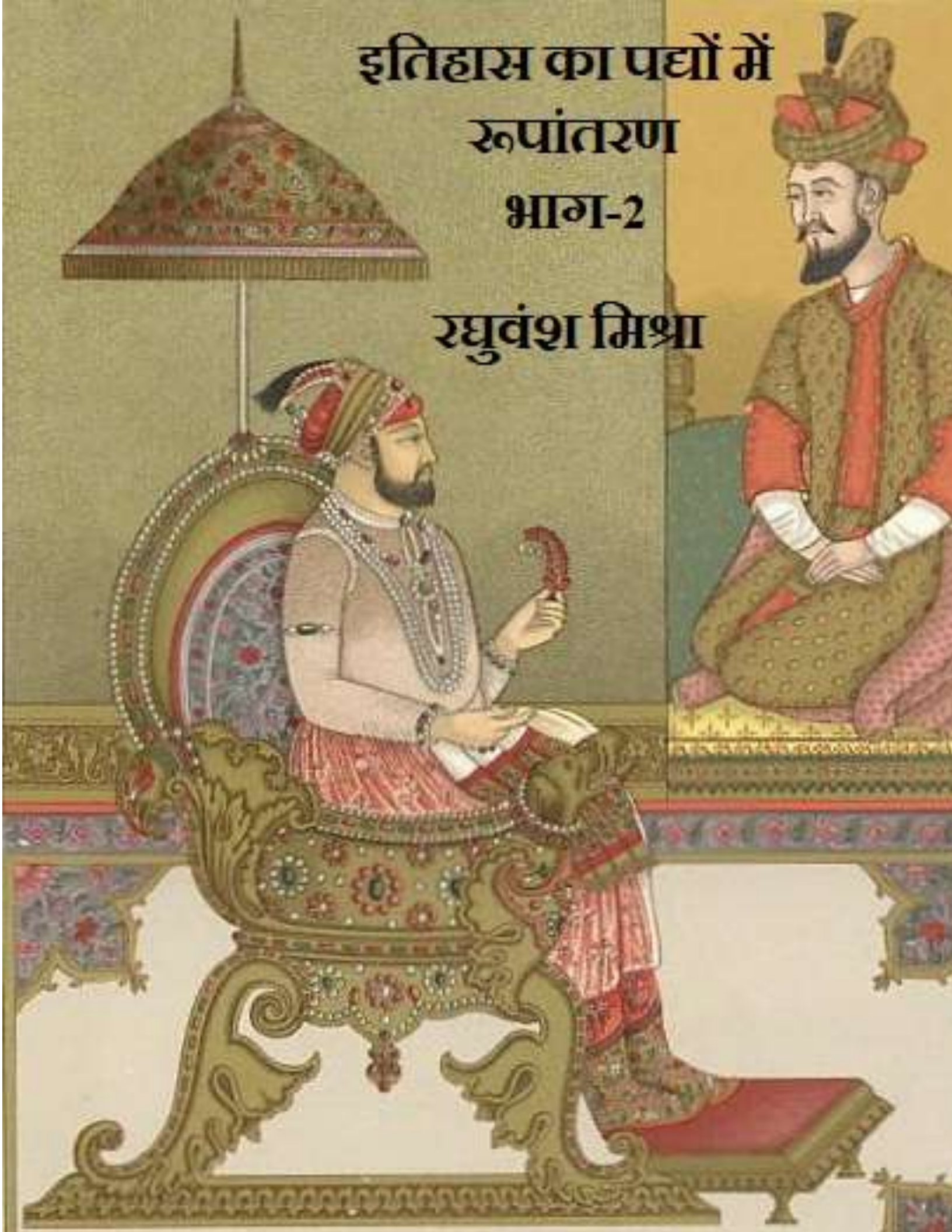

अनुक्रमणिका

क्र	अध्याय	पृष्ठ
1	भूमिका	2
2	छोटे छोटे राज्यों का विकास (600 ई0 से 1200 ई0)	3
3	जीवन में आया बदलाव (600 ई0 से 1200 ई0)	10
4	दिल्ली सल्तन की स्थापना (1206 ई0 से 1290 ई0)	20
5	दिल्ली सल्तन का विस्तार	31
6	सल्तनत कालीन जनजीवन	41
7	मुगल सम्राज्य की स्थापना बाबर से अकबर तक (1526 ई से 1605 ई0)	49
8	विरोध और विद्रोह का समय	67
9	मुगलकालीन जन-जीवन	76

भूमिका

प्रिय शिक्षक बन्धु,

''इतिहास का पद्यो में रुपान्तरण'' का व्दितीय भाग आप सब के लिए प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष महसूस कर रहा हूॅ। मेरे इस हर्ष का कारण जहां एक ओर आप सभी के व्दारा इसे पसंद किया जाना है वही दूसरी ओर बच्चो के व्दारा इतिहास को रुचि व आनंद के साथ पढ़ना भी है।

हम सबको अपना वह समय याद आता होगा जब हम माध्यमिक शाला में इतिहास पढ़ते समय उँघने लगते थे और शिक्षक की खरी-खोटी सुनते थे। हमे यह भी याद है कि कैसे जब शिक्षक महमूद गजनवी, अलाउद्दीन खिलजी और अकबर के व्दारा लड़े गए युध्दों का समय और जीते गए स्थान के नाम पूछते थे तब तुरंत पढ़कर भी भूल जाने के कारण हम उत्तर नही बतला पाते थे। ये सभी तथ्य मेरे मन में आंधी की तरह हमेशा बहते रहे और मन में ऐसा ख्याल बार-बार आता कि एक शिक्षक होने के नाते मैं अपने बच्चो को कैसे रोचक और आनंद पूर्वक इतिहास पढ़ाउ, जिससे वे सरलता से इसके तथ्यो और अवधारणओ को लम्बे समय तक बिना रटे अपने मन मन में रख सकें।

जब से मैने इतिहास को पद्यो में रुपान्तरित कर अपनी कक्षा के बच्चो को पढाना आरंभ किया है, सभी बच्चे इतिहास की ओर आकर्षित हुए है। यहां तक कि कुछ बच्चे तो बीच के काल खण्डो में भी इतिहास पढ़ने की जिद्द करते है। मैने इसे पद्यो मे रुपान्तरित करते समय हमेशा इस बात का ध्यान रखा है कि पद्यो में प्रयुक्त शब्द सरल, रोचक व भावपूर्ण हों, अर्थात कम शब्दो में ज्यादा से ज्यादा अर्थ को प्रकट करने वाला हो।

आशा है प्रथम भाग की तरह यह भाग भी आप सभी शिक्षक बन्धुओं के साथ-साथ अध्यनरत बच्चो के लिए भी उपयोगी और सहयोगी साबित होगा । रही बात कक्षा में प्रसतुतीकरण के तरीके की तो सभी शिक्षकों को सदैव यह बात मन में स्मरण रखना चाहिए कि अगर मैं शिक्षक हूॅ तो हर पल - हर दिन नए विचार व तरीके से परिपूर्ण हूॅ।

रघुवंश मिश्रा
उच्च वर्ग शिक्षक
पू0 मा0 शाला टेंगनमाड़ा

<u>छोटे छोटे राज्यों का विकास</u>

<u>(600 ई0 से 1200 ई0)</u>

राज्यो में हुई आपसी लड़ाई।

पूरे भारत में,

छोटे- छोटे राज्य अस्तित्व में आई ।।

शक्तिशाली राजाओ नें,

इन्हें अपने राज्यों में मिला लिए।

उत्तराधिकारी के अभाव में,

प्रांत और सेनापतियों ने विद्रोह किये।।

शक्तिशाली योध्दा,

कमजोर पर आक्रमण करते।

ब्राम्हण,व्यापारी और किसान,

विजयी राज्यो में जाकर बसते।।

राजा और राज्य बनाने में,

बड़े बड़े जमीन पर अधिकार किये।

सिचाई से फसले प्राप्त कर,

लोगो पर अधिकार पा लिए।।

धर्म,ज्ञान और राज्य चलाने में,

ब्राम्हणों ने की बड़ी सहायता,

राजवंश स्थापित करने में,

दिखाई बड़ी उदारता।।

श्रेष्ठ और उँचा सिध्द करने,

ऋशि और देवताओ से संबंध बतलाए।

बंगाल के पाल,मध्यभारत में कलचुरि,

इसी तरह अस्तित्व में आए।।

उत्तर और दक्षिण के राजाओ ने,

ब्राम्हणो को बसाया।

ब्राम्हणो को दी गई भू दान,

ताम्रपत्र पे खुदवाया।।

ब्राम्हण राजाओ को,

सूर्य,चन्द्र ऋशि का वंशज बतलाते।

श्रेश्ठता स्थापित करने,

राजसूय व अश्वमेध कराते।।

उत्तर भारत में,

भाट परम्परा भी आई ।

राजवंशो को प्रतिपादित करने,

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।।

भाट, दरबारी, कवि,

राजवंशो की प्रतिश्ठा में गीत गाते।

लोगो में राजवंशो के प्रति,

श्रध्दा और गर्व के भाव जगाते।।

क्षेत्र विस्तार की लालसा ने,

राज्यों के मध्य युध्द कराए।

विजयी अधिपति,

पराजित सांमत कहलाए।।

अधिपति के युध्द में,

सामंत सेना लेकर जाते।

परमभट्टारक लिख,

कृतज्ञता दिखलाते।।

प्रतिहार,पाल, राष्ट्रकूटो ने,

राज्य स्थापित कर लिए,

तीनों वंश के राजाओ नें,

कन्नौज केा लेकर युध्द किये।।

छत्तीसगढ़ में कलचुरियों ने,

दक्षिण कोसल को अधिकृत कर लिया।

तुम्माण और रतनपुर से,

लम्बे समय तक राज्य किया।।

इस समय के सभी शासक,

अपने को राजपूत कहते।

इन वंशो की शाखाएं,

अलग-अलग राज्य करते।।

परमार राजा भोज का,

मध्यभारत में था शासन।

राजा भोज प्रसिध्द हुआ,

विज्ञान व साहित्य व रुचि के कारण।।

महमूद का दरबारी विव्दवान,

अलबरुनी भारत आया।

गणित, खगोल और धर्म पर,

गहरी रुचि दिखाया।।

संस्कृत भाषा सीखकर,

जगह-जगह भ्रमण किया।

किताब में अनुभव लिख,

तहकीक-ए-हिन्द नाम दिया।।

अधिकारियो को वेतन के बदले,

भू-क्षेत्र या गांव देते।

प्राप्तकर्ता इन क्षेत्रों से,

स्वयं लगान लेते।।

इस व्यवस्था ने सामंतो मे,

स्वतंत्रता की भावना बढ़ाई।

समय-समय पर सामन्तो से,

अधिपति की अवहेलना कराई।।

चोल वंश ने दक्षिण पर,

किया वर्चस्व स्थापित।

उडीसा और बंगाल को,

युध्द में किया पराजित।।

विशाल समुद्री बेड़े से,

समुद्र पार की चढ़ाई।

समकालीन राजवंशो में,

सर्वाधिक प्रसंशा पाई।।

युध्द में मिले धन से

भव्य मंदिर बनवाए।

तंजौर क वृध्दीश्वर,

राजराजेश्वर मंदिर कहलाए।।

चोल शासक को प्रजा,

कई कर देते।

उत्पादन पर कर,

एक तिहाई लेते।।

जन कल्याण में,

नहर व तालाब बनवाएं।

ग्राम व्यवस्था में,

स्थानीय स्वशासन लाए।।

<u>जीवन में आया बदलाव</u>

<u>(600 ई0 से 1200 ई0)</u>

बड़े साम्राज्य की जगह,

छोटे साम्राज्य अस्तित्व में आए।

छोटे-छोटे राज्यों ने,

पुरानी व्यवस्था में बदलाव लाए।।

उन दिनों काफी लोग,

जंगलों में रहते।

शिकार और कंदमूल से,

जीवन गुजारा करते।।

जंगलो को काटकर,

लगे खेती करनें,

छोटी बस्तियां बना,

गांवों में लगे रहने ।।

इनकी बस्तियों को,

पल्ली कहते थे।

जंगलो से एकत्रित सामग्री,

राजा को भेंट देते थे।।

शबर, निशाद, पुलिंद, भील,

जंगलो में रहते।

वस्तु की अदला-बदली,

शहरो में जाकर करते।।

घुम्म्कड़ जीवन खत्म कर,

गांवो के कृषि कार्य किए।

अच्छे कारीगर में रुप में,

नए काम पकड़ लिए।।

जोगी सन्यासी, भिक्षु भी,

घुम्मकड़ जीवन बिताते।

गांव व शहर के लोगो से,

आदर सत्कार पाते।।

गांव का समाज,

जाति व्यव्स्था से था बंधा।

निम्न जाति लोगो ने किए,

पृथक-पृथक काम धंधा।।

ये लोग बस्ती के,

बाहर ही रहते।

अपने लिये निश्चित,

कार्य किया करते।।

गांव के मुखिया,

पंचकुल व महत्तर कहलाते।

सामूहिक कार्य के साथ,

लोगो की समस्या सुलझाते।।

उत्तर भारत में अधिकारी,

भोगपति कहलाए।

भूमि, शादी, त्यौहार के साथ,

तालाब और कुंओ पर कर लगाए।।

सबसे बड़ा परिवर्तन,

आर्थिक क्षेत्र में आया।

राजा के बदले,

ब्राम्हणों ने कर लगाया।।

भू-दान की परम्पपरा से,

राजा का कम हुआ अधिकार,

भू-दान से बढ़ता गई,

भूपतियों का आधार।।

स्वतंत्र शासको की तरह,

भूपति का हुआ व्यवहार।

किसानो से लगान वसुलने,

उनकी सेना बनी आधार।।

दक्षिण भारत में प्रमुख लोग,

सारा कामकाज चलाते।

कार्यो में सफलता के लिए,

उर व नाडू जैसी ग्राम सभा बनाते।।

नाडू व उर ,

लोगो से लगान लेते।

जन कल्याण पर भी,

अपना ध्यान देते।।

सम्पूर्ण भारत में ,

ब्राम्हणों का था सर्वोच्च स्थान।

दान दिए गांव थे,

ब्रम्हदेय और देवदान।।

इस काल में महिलाओ पर,

तरह तरह के लगे प्रतिबंध।

सभी जाति के लोगो ने,

अनुकरण किए करके आंख बंद।।

महिलाएं अपनी मर्जी से,

कोई कार्य नही कर सकती।

बाल विवाह, सतीप्रथा, वैधव्य के,

कष्टों से गुजरती।।

खेती के विस्तार ने,

छोटे बड़े गांव बसाये।

गांवो के बीच में,

छोटे छोटे शहर भी बनाये।।

खरीदने व बेचने व्यापारी,

मंडपिक या मण्डी आते।

व्यापारी के साथ कारीगर,

दुकान या विधियां लगाते।।

दक्षिण भारत की उन्नति में,

मंदिर का रहा विशेष स्थान।

समृध्दि का कारण बना,

राजाओ से मिला दान।।

समिति ने सम्पत्ति को,

उद्योग, व्यवसाय, में लगाया।

जिससे मंदिर के आस-पास,

नया शहर अस्तित्व में आया।।

व्यापारी शहरो से निकल,

दूसरे देशो में भी जाते ।

दूसरे देश के व्यापारी,

समुद्र से भारत आते।।

चीन, अरब, दक्षिण-पूर्व एशिया,

ईरान आफ्रीका तक व्यापार करते।

अपने हितो की रक्षा करने,

नानादेसी, मणिग्राम श्रेणी में रहते।।

विदेशी व्यापारी,

तटीय प्रदेशो मे आते।

मसाला, कपड़ा, चावल खरीद

अपने देश ले जाते।।

विदेशी व्यापारी अपनी,

संस्कृति और धर्म भी लाए।

स्थायी रुप से बसकर,

भारतीयों से संबंध बनाए।।

जंगल में रहने वाले ,

देवी-देवताओं की पूजा करते।

बुढ़ादेव व माता देवालय के,

छत्तीसगढ़ में अवशेष मिलते।।

लोगो का अध्यात्म में,

बढ़ने लगा रुझान।

धीरे धीरे घटने लगा,

बौघ्द धर्म का स्थान।।

आध्यात्मिक रुझान से,

लोग भक्ति की ओर मुड़े।

जिसके आरंभिक तार,

तमिलनाडू से जुड़े।।

दक्षिण भारत के संत,

शिव और विष्णु को मानते।

कर्मकाण्ड की जगह,

भक्ति प्रेम को बढ़ाना चाहते।।

भक्तो संतो ने तमिल में,

सुन्दर और प्रेम पूर्ण गीत लिखे।

आम लोगो के बीच ,

काफी लोकप्रिय दिखे।।

शिव और विष्णु भक्तों को,

नायनार व आलवार के नाम से जाने।

राम और कृष्ण को,

विष्णु का अवतार माने।।

भक्ति ने मंदिरो का,

अत्यधिक महत्व बढ़ाया।

वैभव की खतिर राजा ने,

मंदिरों को भव्य बनाया।।

मंदिरो के बदले स्वरुप से,

कई भक्त हुए नाराज।

लिंगायत, नाथपंथ, सिध्दो ने,

प्रतिक्रियात्मक आंदोलन का किया आगाज।।

भक्ति आंदोलन से,

भाषा और साहित्य का हुआ विकास।

तमिल, तेलगु, कन्नड़, गुजराती की,

भाषा और रचना हुई खास।।

इस काल में मंदिर,

बनाए गए बहुत बड़े बड़े।

मण्डप उसका नाम था,

जिसमे भक्त होते थे खड़े।।

गर्भगृह, शिखर और मण्डप,

सभी मंदिर में बनाए।

मंदिर निर्माण की शैली,

नागर और विमानन कहलाए।।

कोणार्क, खजुराहो ,तंजावूर में,

इस शैली से हुआ निर्माण।

रतनपुर और भोरमदेव में,

इस शैली का है प्रमाण।।

दिल्ली सल्तन की स्थापना

(1206 ई0 से 1290 ई0)

तुर्किस्तान के तुर्क सुल्तनो ने,

अफगान मे राज्य किया।

रब्बारिज्म के शाह से हारकर,

भारत पर ध्यान दिया।।

गोर का मुहम्मद गोरी,

मुल्तान जीतकर गुजरात की ओर बढ़ा।

गुजरात का मूलराज व्दितीय,

1178 में उसके विरुध्द लड़ा।।

मूलराज से हारकर गोरी ने,

पंजाब पर ध्यान दिया।

शक्तिहीन राजाओ को हराकर,

पंजाब पर अधिकार किया।।

पंजाब पर अधिकार ने,

गोरी की सीमा दिल्ली तक पहुंचाई।

अब मुहम्मद गोरी ने,

दिल्ली विजय की योजना बनाई।।

दिल्ली और अजमेर पर,

चौहान वंशी राजा राज्य करते।

अन्य राजपूत राज्यों को जीतने,

आपस मे युध्द लडते।।

पृथ्वीराज चैहान भी,

गुजरात के भीम से युध्द लड़े।

गुजरात में हारकर,

पंजाब की ओर बढ़े।।

पृथ्वीराज और मुहम्मद गोरी की,

सीमा आपस में टकारई।

1191 में दोनो के बीच,

तराईन में हुई लड़ाई।।

तराईन के प्रथम युध्द में,

पृथ्वीराज ने गोरी को हराया।

घायल मुहम्मद गोरी,

मुश्किल से जीवन बचा पाया।।

1192 में मुहम्मद गोरी,

तराईन के मैदान में पुनः आया।

तराईन के व्दितीय युध्द में,

पृथ्वीराज चैहान को हराया।।

गोरी के सैनिको ने,

पृथ्वीराज की सेना को किया पराजित।

दिल्ली में राजपूतो की जगह,

तुर्को का शासन हुआ स्थापित।।

गोरी के तुर्क सेनापतियो ने

उत्तर भारत पर कब्जा किया।

जिसे ईतिहासकारो ने,

दिल्ली सल्तनत का नाम दिया।।

युध्द के तरीके और साधनो ने,

सफलता मे भूमिका निभाई।

राजाओ के आपसी लड़ाई भी,

समय-समय पर काम आई।।

इसके अतिरिक्त भी,

हार के है कई कारण।

राजा जयचंद का प्रसंग,

आपसी मतभेद का है उदाहरण।।

गोरी ने दिल्ली का अधिकार,

गुलाम अधिकारी व सेनापति को दिया।

1206 में कुतुबुद्दीन ऐबक ने,

गुलाम वंश स्थापित किया।।

व्यापारी युवको को खरीद,

सुल्तानो को बेच देते।

गुलाम योग्यता के अनुसार,

सुल्तानो से वेतन लेते।।

तुर्किस्तान व ईरान मे,

यह परम्परा थी आम।

कुतुबुद्दीन ऐबक भी था,

मुहम्मद गौरी का एक गुलाम।।

अपने को स्वतंत्र घोषित कर,

दिल्ली को स्वतंत्र राज्य बनाया।

दिल्ली का पहला सुल्तान बन,

कुतुबमीनार का निर्माण आरंभ कराया।।

कुतुबद्दीन के बाद बना,

इल्तुमिश सुल्तान।

पूर्ण कराया जिसने,

कुतुबमीनार का निर्माण।।

इल्तुमिश के सामने,

दो थे बडे अवरोध।

पहला सुल्तान के अधिकारी,

दूसरे पराजित राजपूतो का विरोध।।

स्वार्थो के लिए अधिकारी,

विरोध की राह पर चलते।

किसानो से लगान इकठ्ठा कर,

राजकोष में जमा नही करते।।

अधिकारियो व राजपूतो के विरोध ने,

सल्तनत को किया कमजोर।

प्रशासन को ठीक करने,

इल्तुमिश ने ध्यान दिया सुधारो की ओर।।

उॅचे पद पर आसीन किए ,

चालीस योग्य गुलाम।

गुलामो के इस दल को,

दिया चहलगान का नाम।।

वे सब सुल्तान के प्रति,

रहे बहुत वफादार।

उनमे से कई,

बनाए गए इक्तादार।।

इक्तादार लगान वसूल कर,

प्रांतीय शासन भी चलाते।

समय समय पर होने वाले,

विद्रोहो को शक्ति से दबाते।।

एक प्रांत से दूसरे में,

इक्तवार तबादले से आते।

पिता के बाद पुत्र को,

इक्ता विरासत में नही दिए जाते।।

इल्तुमिश के बाद,

जब राजिया सुल्तान बनी,

गैर तुर्को को पद देने पर,

तुर्क सरदारो से ठनी।।

रजिया योग्य राजा की भांति,

राज काज संभालती।

पुरुषों के समान पोशाक पहन,

राज दरबार में आती जाती।।

अपने गुणो के बावजूद,

खास नही कर पाई रजिया।

कठपुतली शासक की चाह में,

तुर्क सरदारो ने करा दी हत्या।।

गद्दी पर बैठने वाली,

वह थी एकमात्र महिला शासक।

तुर्क सरदारो के विरोध का,

जो था एक प्रमुख कारक।।

प्रशासन को ठीक करने,

बना था तुर्क-ए-चहलगान।

जिसका एक सदस्य था,

गयासुद्दीन बलबन, अगला सुल्तान।।

तुर्क सरदार इस समय,

हो गए थे शक्तिशाली,

सरदारो का षडयंत्र बना,

सुल्तान का प्रभाव कम करने वाली।।

बलबन के समक्ष सरदारो ने,

उत्पन्न की गम्भीर समस्या।

सुल्तान ने उनकी शक्ति को,

दृढ़ता से नष्ट कर दिया।।

बलबन को सुल्तान की,

निरंकुश शक्ति पर था विश्वास।

तुर्क सरदारो के विरोध का,

पहले से था उन्हें आभास।।

सुल्तान की स्थिति मजबूत करने,

सिजदा और पायबोस की प्रथा चलाई।।

बलबन का कहना था कि राजा,

पृथ्वी पर हैं ईश्वर की परछाई।।

सिजदा और पायाबोस ने,

सुल्तान की शक्ति को बढ़ाया।

इससे सुल्तान की शक्ति को,

सरदार चुनौती नही दे पाया।।

तुर्क सरदार बलबन से,

रहने लगे बहुत भयभीत।

सुल्तान के कठोरता के पीछे,

राज्य के थे व्यापक हित।।

बलबन की मृत्यु के बाद,

कैकूबाद शासक बना।

आरंभिक तुर्क सुल्तानो ने की,

नई शासन व्यवस्था की स्थापना।।

चंगेज खां के नेतृत्व में,

मंगोलो ने चुनौती दिया।

सुल्तानो ने मुकाबला कर,

शासन को मजबूत किया।।

मध्य एवं पश्चिम एशिया ने,

मंगोलो के आक्रमण सहे।

सुल्तानो के कुशल नेतृत्व में,

भारत आक्रमण से बचे रहे।।

ईरान, ईराक व खुरासान से,

लोग यहां आए।

रीति रिवाज व धर्म,

अपने साथ लाए।।

इतिहास की पुस्तको से,

बहुत सी बाते सामने आया।

सुल्तानो ने विव्दानो से,

अपने राज्य का विवरण लिखवाया।।

दिल्ली सल्तन का विस्तार

प्रथम खिलजी सुल्तान,

जलालुद्दीन को छल से मार।

अलालुद्दीन खिलजी ने किया,

दिल्ली सल्तनत पर अधिकार।।

दिल्ली सुल्तनो के शिलालेख,

बहुत कम दिखते हैं।

दरबारी इतिहासकारो की किताब से,

काफी जानकारी मिलती है।।

इतिहासकारो को संरक्षण देकर,

राज्य का विवरण लिखवाये।

अलाउद्दीन खिलजी का विवरण,

अमीर खुसरो व बरनी लेकर आए।।

1296 में अलाउद्दीन,

दिल्ली की सत्ता में आया।

अपनी स्पष्ट नितियो से,

सल्तनत को सुदृढ बनाया।।

सुल्तान बनने से पहले,

देवगिरि राज्य को हराया।

दक्षिण के सम्पन्न राज्य से,

काफी धन लूट कर लाया।।

इस धन से अपनी,

सेना को मजबूत बनाया।

बड़े अमीरो को धन बांट,

अपनी तरफ मिलाया।।

अमीर व सरदारो को,

अपने नियत्रंण में कर लिया।

उद्दण्ड सरदारो को,

कठोर से कठोर दण्ड दिया।।

उद्दण्ड अमीरो की जगह,

नए अमीर नियुक्त किए।

बहुत से भारतीय मुसलमानो को,

उॅचे - उॅचे पद दिए।।

सल्तनत में षडयंत्र रोकने,

उत्सवो पर प्रतिबंध लगाया।

अमीरो के विद्रोह रोकने में,

भारी सफलता पाया।।

सल्तनत के जासूस,

हर खबर देते रहते।

अलाउद्दीन इनकी मदद से,

हर चीज पर नजर रखते।।

अलाउद्दीन की नितियां,

सेना व अमीरो मे अनुशासन लाईं।

जिनका उपयोग कर,

गुजरात, थम्भौर, चित्तौड़ व मालवा में विजय पाई।।

1299 में उसने,

गुजरात पर विजय पाया।

खूब धन प्राप्त कर,

उसे सल्तनत में मिलाया।।

अलाउद्दीन ने दक्षिण में,

अलग नीति अपनाया।

देवगिरि को जीतकर,

अपने राज्य के अधीन नही लाया।

दक्षिण को हराकर,

नही किया अधिकार।

बदले में हर साल लिया,

कुछ कर व उपहार।।

आर्थिक समृध्दि पाना,

अलाउद्दीन का था ध्येय।

विजित राज्यो से धन लेना,

दक्षिण अभियान का रखा उद्देश्य।।

अलाउद्दीन के खर्च,

युध्द और लगान से पूरे होते।

किसान अपनी उपज का ,

आधा हिस्सा देते।।

अलाउद्दीन ने पुराने अधिकारियों को,

लगान वसूली से हटाया।

नए अधिकारियो से अब,

लगान वसूल कराया।।

सुल्तान ने,

रियासतों को हटाया।

बिचैलियो को खत्म कर,

किसानो से सीधा सम्पर्क बनाया।।

कम कीमत पर सामान मिले,

इस पर विशेष ध्यान दिया।

सभी वस्तुओ की कीमत,

बाजार में निश्चित किया।।

सही किमत व वजन के लिए,

बाजार को दिया नियत स्थान।

हुलिया और दाग प्रथा से,

सैनिको को मिली स्पष्ट पहचान।।

अलाउद्दीन के समय भी,

मंगोलो ने की चढ़ाई।

सुल्तान की शक्ति के कारण,

राज्य सीमा में प्रवेश नही कर पाई।।

1316 में मृत्यु तक,

अलाउद्दीन ने दी मंगोलो को टक्कर।

1320 में गयासुद्दीन तुगलक ने,

शासन आरंभ किया सुल्तान बनकर।।

कठोर नीतियों को छोड़कर,

उदारता से किया शासन का काम,

दिल्ली के पास नगर बसाकर,

तुगलकाबाद का दिया नाम।।

गयासुद्दीन के बाद मुहम्मद बिन ने,

सल्तनत का किया विस्तार।

कई योजनाए लागू कर,

इतिहास में पाई प्रसिध्दि अपार।।

मुहम्मद बिन ने देवगिरि दौलताबाद को,

अपनी राजधानी बनाया।

चांदी के सिक्को की जगह,

तांबा मिश्रित कांसे का सिक्के चलाया।।

सुल्तान के आदेश पर लोग,

दिल्ली से दौलताबाद किए प्रस्थान।

आदेश नही मानने पर,

कठोर दंड से निकाला प्राण।।

बहुत से लोगो ने,

रास्ते में जीवन गवाया।

दौलताबाद में रहना,

उन्हें रहना पसंद नही आया।।

इसका मतलब यह नही कि,

दिल्ली अब हो गई खाली।

उत्तर में दिल्ली,दक्षिण में देवगिरि,

शासन के देा केन्द्र बना शक्तिशाली।।

चांदी के सिक्को की जगह,

तांबा युक्त कांसे का सिक्का चलाया।

अपनी इस योजना से,

सुल्तान ने राज्य में चांदी बचाया।।

चांदी की कमी से,

यह योजना बनाया।

जाली सिक्के ढालकर,

लोगो ने लाभ कमाया।।

सुल्तान के इस योजना ने,

अर्थव्यवस्था को किया अस्त व्यस्त,

अंत मे मुहम्मद बिन ने,

कांसे के सिक्के को किया निरस्त।।

लोगो को कांसे के बदले,

चांदी का सिक्का दिया।

कोष की क्षतिपूर्ति के लिए,

दो आब से ज्यादा कर लिया।।

मुहम्मद तुगलक की नीति से,

राज्य को हुआ व्यापक नुकसान।

उन्होने विजय करना चाहा,

करागिल और खुरासान।।

मुहम्मद की योजनाएं,

लोगो ने असफल कही,

भेदभाव रहित पद देने की,

उनकी नीति सफल रही।।

योग्यता के आधार पर,

लोगो को नौकरी दिए।

तुर्क अमीरो की जगह,

सामान्य अमीरो ने पद प्राप्त किए।।

तुगलक सुल्तान के अधीन,

सल्तनत का हुआ विस्तार।

प्रांतपतियों ने धीरे धीरे,

सत्ता मानने से किया इनकार।।

स्वतंत्र सुल्तान सा हो गया,

हर प्रांत कुछ समय बाद।

तुगलक सुल्तानो का वैभव,

अब नही रहा निर्बाध।।

सल्तनत कालीन जनजीवन

तुर्क सुल्तानो ने न केवल,

शासन किया स्थापित।

हमारे देश की,

संस्कृति को भी किया प्रभावित।।

पश्चिम और मध्यएशिया से,

लोगो का रहा आना जाना।

भारत में बस कर,

इसे अपना देश माना।।

कारीगर, विव्दान संत,

वहां से आकर बसे।

फारसी और हिंदवी में,

अपने अपने ग्रंथ रचे।।

मंगोल आक्रमणकारी चंगेज खां ने,

मध्य एशिया को हराया।

लोगो को भयाक्रांत कर,

भारत की ओर भगाया।।

चंगेज खां के डर से,

भारत की ओर किए प्रस्थान।

हुनर, विव्दता व धार्मिकता से,

आत्मसातीकरण में दिए योगदान।।

सल्तनतकाल में सुल्तान,

था निरंकुश शासक।

सभी शक्ति स्त्रोतो का,

वह था एक मात्र कारक।।

सुल्तान योग्यता के अनुसार,

नियुक्त करते थे अधिकारी।

पुराने राजाओ को दिए,

अपने अधीन जिम्मेदारी।।

पहले राज्य पद दिए जाते,

जो होते थे वंशानुगत रिश्तेदार।

अधिकारियो के विद्रोह रोकने,

तबादले किए गए लगातार।।

पहले सामन्त मनमर्जी से,

किसानो से कर लेते।

अब किसान लगान,

सल्तनत के अधिकारियो को देते।।

छोटे-छोटे करो की जगह,

बड़ा लगान तय किया।

किसानो ने उपज का,

आधा भाग कर दिया।।

सुल्तान किसानो से,

नगद लगान मांगते।

इस कारण किसान अनाज,

शहर जाकर बेचना चाहते।।

किसानो का शहरो में,

अब आना जाना बढ़ा।

व्यवसाय और संस्कृति पर,

इसका गहरा असर पड़ा।।

तुर्क अपने साथ,

तकनीक और उद्योग लाए।

जिसने शहरो के,

विस्तार और विकास बढ़ाए।।

लोग तरह तरह के,

लगे व्यवसाय करने।

मिस्त्री, दर्जी, बुनकर, बढ़ई,

शहरो में आए रहने।।

मध्य एशिया के कारीगर,

इमारत बनाने के नए तरीके लाए।

अपने इमारतो में,

मीनार, गुम्बद और मेहराब बनाए।।

चीनियो से तुर्को ने,

कागज बनाने की कला सीखी।

कागजो का उपयोग कर,

कई पुस्तके लिखी।।

घोड़ो मे नाल और रकाब लगाना,

तुर्को ने शुरु करवाया।

तकली की जगह सूत कातने,

लोगो से चर्खे चलवाया।।

गणित, खगोल, आयुर्वेद व योग में,

जो कुछ भी अच्छा दिखा।

अरब के विव्दानो ने उसे,

भारतीय विव्दानो से सीखा।

शून्य का उपयोग सीख,

अरबो ने यूरोप में फैलाया।

विभिन्न भारतीय ग्रंथो का,

अरबी, फारसी में अनुवाद कराया।।

सदियो पहले अरब व्यापारी,

पश्चिमी तट पर आए।

अपने साथ

इस्लाम धर्म लाए।।

इस्लाम को बढ़ावा दिए,

सल्तन काल में सुल्तान।

इस्लामी संतो को दान देकर,

मस्जिदो का कराया निर्माण।।

राजकाज से दूर रह,

जो खानकाह में जीवन बिताते।

उँचे/सच्चे आदर्शो से,

सूफी संत कहलाते।।

बड़े-बड़े अधिकारी,

सूफी संतो के पास जाते।

सेवा व ईश्वर प्रेम को,

सच्चा धर्म बतलाते।।

निजामुद्दीन का प्रिय शिष्य,

अमीर खुसरो था प्रसिध्द कवि।

कविताओ की भाषा बनी,

फारसी और हिन्दवी।।

तबला और सितार,

अमीर खुसरो ने दिया।

पहेलियो की रचना कर,

लोगो मे प्रचलित किया।।

भारत मे लगाव से,

भारत में आकर रहे।

प्रशंसा में गीत लिख,

अपने को तोता-ए-हिन्द कहे।।

इस्लाम मे कहा हैं,

सब है ईश्वर के समक्ष समान।

उॅच-नीच व मूर्ति पूजा का,

इसमें नही है कोई स्थान।।

इस्लाम ने एकेश्रवादी,

धर्म पर दिया जोर।

सरलता व सादगी ने,

लोगो को किया अपनी ओर।।

सल्तनत तक इस्लाम में,

उत्पन्न हुई कई धाराए।

सिया, सुन्नी, सूफी, इस्लामी,

सम्प्रदाय के रुप में सामने आए।।

इस्लाम के एकेश्वरवाद ने,

हिन्दु संतो पर प्रभाव छोड़ा ।

दोनो धर्मो के आदान प्रदान ने,

लोगो को आपस में जोड़ा।।

कबीर व नानक,

एकेश्वरवाद को माने।

जीवन भर कार्य किए,

धर्मो के बीच अंतर मिटाने।।

सन्तो के अनुसार,

उॅच नीच व आडम्बर का विरोध।

ईश्वर प्रेम से आएगी,

सर्व धर्म समभाव का बोध।।

मुगल सम्राज्य की स्थापना

बाबर से अकबर तक (1526 ई0 से 1605 ई0)

दिल्ली सल्तनत में अंतिम था,

लोदी वंश का राज्य।

अब भारत में स्थापित हुई,

मुगलो का सम्राज्य।।

बाबर तुर्कीस्तान के,

परगना का था शासक।

बाबर बना भारत में,

मुगल सम्राज्य का संस्थापक।।

कम उम्र का लाभ उठा,

विद्रोहियो ने विद्रोह किया।

बाबर को परगना से,

बाहर कर दिया।।

विरोध के बाद बाबर,

परगना पर अधिकार नही कर पाया।

तब उसने काबुल पर,

अपना आधिपत्य जमाया।।

मध्य एशिया में असफल हो,

बाबर ने चाहा भारत मे आना।

पंजाब के सूबेदार भी,

चाहते थे इब्राहीम लोदी को हराना।।

दौलत खां ने बाबर को,

हमले का दिया आमंत्रण।

संकेत पाकर बाबर ने,

किया भारत पर आक्रमण।।

1526 के पानीपत के युध्द में,

इब्राहिम लोदी हुआ पराजित।

बाबर ने भारत में,

मुगल सम्राज्य किया स्थापित।।

बाबर की अनुभवी सेना ने,

आक्रमण किये जाकर।

बाबर के नेतृत्व में,

लड़े युध्द डटकर।।

बंदूके व बारुदी तोपो से,

लोदी सेना का हुआ हार।

पनीपत के प्रथम युध्द से,

बाबर का दिल्ली पर हुआ अधिकार।।

बाबर के सरदार लूट कर,

चाहते थे वापस जाना।

भारत में रहकर बाबर,

राज्य करने को ठाना।।

बाबर ने राणा सांगा से,

अगला युध्द किया।

मेवाड़ को जीतकर,

साम्राज्य में मिला लिया।।

राणा सांगा ने बाबर को,

रोकने का किया प्रयास।

राजपूत व अफगान सरदार से,

जीतने का मिला विश्वास।।

राजपूतो की तैयारी देख,

बाबर की सेना हुई हताश।

बाबर के जोशीले भाषण ने,

सैनिको मे बंधायी जीत की आस।।

बाबर के भाषण का,

अच्छा प्रभाव पडा।

1527 के खानवा युध्द मे,

सैनिको ने भीषण युध्द लड़ा।।

खानवा के मैदान में,

राणा सांगा हुआ पराजित।

बाबर ने दिल्ली पर,

मुगलों की सत्ता की स्थापित।।

बाबर का शौक भारत में,

सुन्दर बगीचो में दिखा।

तुर्की भाषा में,

अपनी आत्मकथा लिखा।।

बाबर ने सुन्दर बगीचे,

मुगल शैली में बनवाया।

आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी,

बाबर नामा भी कहलाया।।

बाबर की मृत्यु के बाद,

बेटा हुमायूं की बारी आई।

पिता के जीते क्षेत्र को,

संभालने मे हुई कठिनाई।।

भाईयो के अतिरिक्त,

राजपूत व अफगानो का था सामना करना।

गुजरात और मालवा में,

पड़ा भयंकर युध्द लड़ना।।

पूर्वी भारत मे अधिकार,

स्थापित नही कर पाया।

1540 मे अफगान सरदार,

शेरशाह ने हराया।।

1540 से 1555 तक,

इधर उधर रहा भटकता।

पुनः शासन की आस में,

फिरा हुमायूं तड़पता।।

हुमायूं ईरान में,

शाह के यहां शरण ली।

अफगानो के विरुध्द,

शाह ने मदद की।।

शाह की मदद से,

साम्राज्य किया पुनः प्राप्त।

सीढ़ी से गिर जाने पर,

1556 में जीवन हुआ समाप्त।।

हुमायूं को

शेरशाह ने हराया।

भारत से दूर,

ईरान की ओर भगाया।

राजपूत और अफगानो को भी,

शेरशाह ने हराया।

बिहार के सासाराम को,

अपनी जागीर बनाया।।

राज्य को सुदृढ़ बनाने ,

शेरशाह ने किया प्रयास अपार।

राजा टोडरमल को,

भू-सुधार का मिला अधिकार।।

शेरशाह ने अपने शासन में,

जन कल्याण के कार्य करवाए।

जल व्यवस्था के साथ,

सड़के और सराय बनवाए।।

शेरशाह ने सिक्को का,

चलन आरंभ करवाया।

तांबे का सिक्का दाम,

चांदी का रुपया कहलाया।।

पूर्व से उत्तर पश्चिम तक,

ग्रांड-ट्रंक रोड़ बनवाया।

शेरशाह के अच्छे कार्य को,

अकबर ने आगे बढ़ाया।।

शेरशाह ने सासाराम मे,

भव्य मकबरा बनवाया।

1546 मे कालिंजर में,

मृत्यु को गले लगाया।।

हुमायूँ की मृत्यु ने,

शासक बनने का दिया अवसर।

बैरम खां के सहयोग से,

सिंहासन पर बैठा अकबर।।

जिस समय अकबर,

भारत का बना शासक।

उस समय वह था,

14-15 वर्ष का बालक।।

बैरम खां के सहयोग से,

अकबर ने राज चलाया।

फिर शासन स्वयं सम्भाल,

अपना योग्यता दिखया।।

विशाल सम्राज्य बनाने,

अकबर ने बोला धावा।

1561 के प्रथम अभियान में,

उसने जीता मालवा।।

गोड़वाना, चित्तौड़, गुजरात,

का भी हुआ बुरा हाल।

1574 में शामिल हुआ,

मुगल साम्राज्य में बंगाल।।

1586 से 1600 के बीच जीता,

कश्मीर, सिंध, उड़ीसा, कंधार।

दक्षिण में जीता उसने,

अहमदनगर,खानदेश, और बरार।।

अकबर का सम्राज्य विस्तार में,

नही था कोई सानी।

आरंभ में थे उनके सेनापति,

बाहर के तुरानी या ईरानी।।

धीरे धीरे भारतीय मुसलमानो को

इन पदो पर बैठाया।

राजपूतो राजाओ को भी,

अपना अधिकारी बनाया।।

राजपूत राजाओ के प्रति,

दोस्ती का हाथ बढ़ाया।

अधीनता स्वीकार करने पर,

राज्य उन्हे लौटाया।।

वैवाहिक संबंध बनाए,

राजपूत राजाओ के साथ।

सेवा में ऊंचे पद रखे,

भगवानदास व मानसिंह के हाथ।।

अकबर ने किया,

भारमल की बेटी से विवाह।

राजपूत रानियो ने किया,

धार्मिक स्वतंत्रता से जीवन निर्वाह।।

अकबर की राजपूत नीति,

सबित हुई कारगार।

मेवाड़ के राणा को छोड़,

सबने की अधिनता स्वीकार।।

1576 में मानसिंह व सलीम ने,

चित्तौड़ में सेना को किया परास्त।

राणा प्रताप ने टक्कर दिया

हल्दीघाटी के युध्द में जबरदस्त।।

हल्दीघाटी के प्रसिध्द युध्द में,

राणा प्रताप की हुई हार।

अधिनता उन्होने अकबर की,

जीवन पर्यन्त नही कि स्वीकार।।

पहाड़ियो मे रहकर,

मुगलो को चुनौती दिया।

मंत्री के समर्पित धन से,

सेना को पुनर्गठित किया।।

गोड़ राजवंश के अधीन,

सम्पन राज्य था गोड़वाना।

सम्पन्नता से प्रभावित हो,

अकबर ने जीतने को ठाना।।

राजा दलपत की मृत्यु पर,

वीरनारायण की संरक्षिका बनी रानी।

अपनी उदरता व दक्षता से,

राजकाज करने की ठानी।।

गोड़वाना जीतने सेना ने,

आसफखां के नेतृत्व में किया हमला।

रानी दुर्गावती ने किया ,

मुगल सेना का मुकाबला।।

रानी दुर्गावती ने युध्द में,

कवच, शिरस्त्राण धारण की।

मुगलो की सेना को,

भीषण टक्कर दी।।

युध्द मे रानी ने,

सारी ताकत झोकी।

हार की अपमान से बचने,

स्वयं छाती में कटार भोंकी।।

अकबर का सम्राज्य,

पन्द्रह सूबो से था बना।

प्रांत सूबा, जिला सरकार,

तहसील था परगना।।

गांव के समूह से,

एक परगना बनता।

प्रशासन के लिए अकबर,

अधिकारी नियुक्त करता।।

केन्द्र से परगना तक,

अधिकारी होते जिम्मेदार।

मुगल शासन के अधिकारी,

कहलाते मनसबदार।।

मनसबदार को सेना के अनुसार,

दर्जा दिया जाता।

मनसबदारो का यह दर्जा,

मनसब कहलाता।।

मनसबदारो को बादशाह,

खुद नियुक्त करते।

इस तरह उन पर,

सीधा नियंत्रण रखते।।

जरुरत पड़ने पर मनसबदार,

बादशाह के साथ जाते।

उॅचे-उॅचे वेतन लेकर,

शान शौकत का जीवन बिताते।।

वेतन के बदले मनसबदार,

बड़े-बड़े जागीर पाए।

लगान इकठ्ठा कर,

जागीरदार कहलाए।।

अधिकारियो की मनमानी रोकने,

तबदला नीती अपनाया।

प्रशासन को चुस्त रख,

आज्ञा पालन करवाया।

बादशाह बनने के समय,

लगान व्यवस्था थी कमजोर।

किसानो पर,

जमीदारो का था जोर।।

अकबर ने तय किया,

किसान कर रुपयो में देगें।

खेती के हिसाब से,

तिहाई या आधा हिस्सा लेंगे।।

किसान को किए गए खेती पर,

लगान देना पड़ता।

एकत्रित लगान से,

राज्य का खर्च चलता।।

अकबर ने धर्म गुरुओ के बीच,

धर्म पर चर्चा करवाया।

राजधानी फतेहपुर सीकरी में,

इबादत खाना बनवाया।।

1575 से 1585 के बीच,

इबादतखाना में चर्चा करवाई।

इस्लामी धर्मगुरुओ के अतिरिक्त,

शामिल रहे हिन्दु, जैन, पारसी व ईसाई।।

चर्चा से अकबर के मन में,

यह बात आई।

सभी धर्मो मे है,

सच्चाई और अच्छाई।।

धार्मिक भिन्नता का मान रखने,

शांति की नीति अपनाई।

सहिष्णुता की यह नीति,

सुलह कुल कहलाई।।

अकबर ने हिन्दुओ पर,

हटाया तीर्थकर व जजिया।

हिन्दुओ और जैन मंदिर को,

भूमि व धन दान दिया।।

अकबर निजी जीवन में,

धर्म सार को अपनाए ।

रामायण, उपनिषद, महाभारत का ,

फरसी में अनुवाद करवाए।।

अकबर ने सभी को,

धार्मिक स्वतंत्रता दिया।

मुगल सम्राज्य की प्रगति में,

लोगो से समर्थन प्राप्त किया।।

अकबर ने बहुत से,

किए प्रशंनीय काज।

फिर आया भारत में,

पुत्र जहांगीर का राज।।

विरोध और विद्रोह का समय

अकबर के बाद जहांगीर,

शासक बना यहां।

1627 में उनकी मृत्यु पर,

बादशाह बना शाहजहां।।

1657 में बादशाह,

शाहजहां बीमार पड़ा।

गद्दी के लिए बेटो ने,

आपस में युध्द लड़ा।।

आपसी युध्द में,

पराजित हुए तीन भाई।

उत्तराधिकार के युध्द में,

औरंगजेब ने विजय पाई।।

1658 में बादशाह बन,

पिता को कैद किया।

अपने शासन में सम्राज्य को

सबसे विस्तृत रुप दिया।।

सम्राज्य का आर्थिक भार,

किसानो पर पड़ा।

जिससे उनका हाल ,

लगातार बिगड़ा।।

सेना और ईमारत निर्माण पर,

सम्राट खर्च करता।

जिससे किसानो पर,

लगान का बोझ पड़ता।।

लगान ज्यादा होने पर,

किसानो से गांव छूटे।

अन्य किसानो से मिल,

विद्रोह करने में जुटे।।

औरंगजेब के समय,

किसान विद्रोह थी आम बात।

स्थानीय जमींदारो ने भी,

किसानो का दिया साथ।।

जाट, मवेती, सिक्ख, बुंदेली,

विद्रोही बनकर हुए खड़े।

विद्रोहो से हिल गई,

सम्राज्य की मजबूत जड़े।।

अधिकारियो के बढ़ने से,

जागीरो का रकबा घटा।

जागीरो में कमी से,

जागीरदारों का असंतोष फटा।।

जागीरदार बच सकते थे,

जागीर में खेती बढ़ा कर।

तबादला नीति से मन मे था,

जागीर छीन जाने का डर।।

समस्या से निपटने औरंगजेब ने,

दूसरा रास्ता अपनाया।

पूर्वी और दक्षिणी राज्यो मे,

अपना सम्राज्य बढ़ाया।।

इन राज्यो से लगान की,

वसूली होती थी जितनी।

अमीरो पर खर्च,

हो जाती थी उतनी।।

विजय से औरंगजेब की,

नही बढ़ी आमदनी।

अधिकारियो के लिए जागीर की,

कमी रही बनी।।

जोधपुर में राठौर वंश के,

राजपूतो का था शासन।

उत्तराधिकार का उल्लंघन,

राजपूत विद्रोह का था कारण।।

मेवाड़ के राणा ने,

जोधपुर का साथ दिया।

औरंगजेब के बेटे ने,

रातपूतो से मिलकर युध्द किया।।

वंश की रक्षा के लिए,

राजपूत युध्द में पड़े।

हार के बावजूद,

लम्बे समय तक लड़े।।

बीजापुर और गोलकुण्डा में,

उॅचे पद पर थे मराठा सरदार।

महाराष्ट्र के पश्चिम में,

स्थापित किया अपना अधिकार।।

शाहजी और जीजाबाई के बेटे,

शिवाजी ने स्वतंत्र राज्य बनाया।

आरंभ में छोटे छोटे,

मराठा जमींदारों को हराया।।

फिर बीजापुर के,

सुल्तान की बारी आई।

अफजल खा को मारकर,

महत्वपूर्ण विजय पाई।।

बाद मे शिवाजी ने,

मुगलो को टक्कर दिया।

उनके व्यापारिक केन्द्र,

सूरत पर कब्जा किया।।

शिवाजी से नाराज हो,

औरंगजेब ने बंदी बनाया।

मुगलो की योजना असफल कर,

मुश्किल से बाहर निकल पाया।।

मुगल सेना से शिवाजी,

लड़ते रहे लगातार।

सीधा युध्द न कर,

अचानक करते वार।।

तेजी से हमलाकर,

पहाड़ियो में छुप जाता।

युध्द का यह तरीका,

छापामार युध्द कहलाता।।

शिवाजी के सफलता में,

छापामार युध्द था एक कारण।

1674 में राजा बन,

छत्रपति की उपाधि किया धारण।।

सुदुर दक्षिण में,

तमीलनाडु बना सीमान्त।

1680 में शिवाजी का,

हो गया देहान्त।।

औरंगजेब था एक,

रुढ़िवादी मुसलमान।

शरियत पर शासन कर,

बनाई अपनी पहचान।।

अकबर ने सम्राज्य को,

मिला जुला स्वरुप दिया।

औरंगजेब ने नीति बदल,

कुत्सित कार्य किया।।

औरंगजेब ने बंद की,

गैर इस्लामिक परंपराएं।

जिनमें सर्वप्रमुख था,

त्यौहार, संगीत और चित्र कलाएं।।

जजिया से औरंगजेब ने,

हिन्दुओ को किया दण्डित।

अपने आक्रमण में,

हिन्दु मंदिरो को किया खण्डित।।

औरंगजेब ने सोचा,

कट्टर नीति से शासन करेगा।

जिससे मुसलमान उन पर,

भरोसा कर सकेगा।।

औरंगजेब को समझा गया,

रुढ़िवादी व कट्टर मुसलमान।

जिसने मुगल सम्राज्य को,

पहुंचाया भारी नुकसान।।

औरंगजेब की,

कट्टर नीति के बावजूद।

सर्वोच्च पद पर हिन्दू,

बने रहे खुद-ब-खुद।।

सम्राज्य हित में औरंगजेब,

अलग-अलग नीति अपनाया।

शासन के उॅचे पद पर,

राजपूत और मराठो को नियुक्त कराया ।।

1707 में औरंगजेब की मृत्यु से,

सम्राज्य का हुआ बुरा हाल।

अवध, पंजाब, हैदराबाद की तरह,

स्वतंत्र हुए मराठे,जाट और बंगाल।।

नाम मात्र के लिए बादशाहो के,

अधीन रहे ये राज्य।

टूटकर बिखर गया,

विशाल मुगल सम्राज्य।।

मुगलकालीन जन-जीवन

सम्पन्न देश के रुप में,

भारत था प्रसिध्द।

यहां के लोग भी थे,

सम्पन्न और समृध्द।।

सम्पन्नता और समृध्दि ने,

दूसरे देशो को आकर्शित किया।

व्यापार के माध्यम से,

धन कमाने का अवसर दिया।।

यूरोपियो ने व्यापार कर,

बहुत धन कमाया।

बाद में अवसर पाकर,

अपना अधिकार जमाया।।

धनवान और ताकतवर,

लोगो का था राज।

अमीर, मध्य व निम्न वर्ग में

बॅटा था मुगलकालीन समाज।।

सर्वोच्च अधिकारी के रुप में,

बादशाह शासन करते।

उॅचे पदों पर आसीन,

लोगो को अमीर कहते।।

सेनापति, प्रांतपति का काम,

प्रमुख अमीर करते।

जागीर से लगान लेकर,

भव्य महलो में रहते।।

शानो शौकत में नही था,

कोई अमीर समान।

प्रमुख अमीर थे तुर्क, राजपूत,

ईरानी व भारत के मुसलमान।।

शहरी मध्य वर्ग में थे,

सैनिक और छोटे अधिकरी।

कुछ मध्य वर्ग के लोग थे,

बहुत धनवान व्यापारी।।

जमीदार लगान इकठ्ठा करने वालो की,

श्रेणी में आते।

समय-समय पर किसानो की बात,

शासन तक पहुंचाते।।

इनके बाद,

सेवक वर्ग आते।

किसान, कारीगर, दलित

के रुप में जाने जाते।।

ये लोग गरीबी मे,

जीवन व्यतीत करते।

जमीदार व जागीरदार के,

अत्याचारो को सहते।।

बहुत कठिनाईयो में,

करते थे परिवार का पोषण।

सबसे ज्यादा होता था,

इस वर्ग का शोषण।।

इस समय छत्तीसगढ़ में,

कलचुरियो का था शासन।

ब्राम्हण को ऊंचा स्थान मिला,

धार्मिक व शैक्षिक कार्य के कारण।।

राजाओ ने ब्राहणो को दिए,

गांव के गांव दान।

इससे ब्राम्हणो को मिला,

समाज में ऊंचा स्थान।।

-

त्यौहार, मेले उत्सव,

मिलकर सभी मनाते।

दशहरा, दिवाली, होली,

हिन्दु त्यौहार के रुप में आते।।

समाज में उत्सव का,

महत्व नही था कम।

प्रमुख मुस्लिम त्यौहार थे,

ईद, नौरोज और मुहर्रम।।

उर्स के लिए प्रसिध्द हुआ,

सूफी संतो का मजार,

मेला, वर्षगांठ व विवाह उत्सव में,

भाग लेते थे शाही परिवार।।

सभी मुस्लिम बादशाह,

मानते थे इस्लाम धर्म।

अकबर, जहांगीर ने समझा,

दूसरे धर्मो के मर्म।।

अकबर व जहांगीर ने लोगो से,

धार्मिक नीति का अनुकरण कराया ।

इस काल के भक्त कवियो ने,

सभी धर्मो का आदर करना सीखाया।।

इसी समय छत्तीसगढ़ में,

कबीर पंथ का हुआ आगमन।

कबीरदास प्रणेता बने,

अनुयायी सभी जन-गण।।

कबीरदास ने,

दामाखेड़ा में जन्म लिया।

अनुयायियो ने इसे,

तीर्थ-स्थल क रुप दिया।।

रतनपुर, डोंगरगढ़, दंतेवाड़ा,

शक्ति केन्द्र के रुप में थे स्थापित।

कबीर पंथ के साथ-साथ,

देवी पूजा से लोग थे प्रभावित।।

समाज पहले की तरह,

अब भी रहा कृषि प्रधान।

किसान अपनी उपज से,

बादशाह को देते लगान।।

परम्परागत फसलो के साथ,

किसान नई फसल उपजाए।

यूरोपीय व्यापारी ऐंसे फसल,

भारत लेकर आए।।

उपज का बड़ा हिस्सा,

लगान में चला जाता।

कड़ी मेहनत के बाद भी,

कुछ हाथ नही आता।।

बढ़ाने के लिए,

लोग अपनी आय।

खेती के अतिरिक्त,

किए अन्य व्यवसाय।।

सत्रहवी शताब्दी में हुआ,

कपड़े का सर्वाधिक व्यापार।

सूती वस्त्र के केन्द्र थे,

गुजरात,बंगाल और बिहार।।

मलमल के लिए ढाका,

उन के लिए रहा कश्मीर का नाम।

बनारस में हुआ,

कपड़ो में जरी का काम।।

विदेशी व्यापारी भारत से,

वस्त्र, अफीम, नील, काली मिर्च लेते।

इन वस्तुओ के बदले,

सोना,चांदी,रेशम,मखमल देते।।

पुर्तगाली नाविक ने किया,

1498 में बडा कारनामा।

समुद्री रास्ते की खोज करते,

भारत आया वास्कोडिगामा।।

समुद्री रास्ते की खोज से,

भारत में बढ़ा व्यापार।

भारतीय व्यापारीयो को मिला,

यूरोपिय देशो का बाजार।।

मुगलो ने भवन निर्माण में,

सुन्दर मिश्रण दिखाई।

भारत ईरान व मध्य एशिया की,

कला शैली अपनाई।।

ईमारतो का अनुपात,

भव्यता और सुंदरता।

चारो ओर उद्यान,

इस कला की रही विशेषता।।

मुगलो ने ईमारत,

ऊंचे चबुतरो पर बनवाए।

ईमारतो के निर्माण में,

संगमरमर का उपयोग करवाए।।

नक्काशीदार जाली, दुहरे, अर्ध्दगुम्बद,

ईमारतो की है विशेषताएं।

ईमारतो को बनानें,

लाल, सफेद, संगमरमर उपयोग मे लाए।।

अकबर ने फतेहपुर सीकरी का,

प्रसिध्द नगर बसाया।

सिकरी में बुलंद दरवाजा,

आगरा में लाल किला बनवाया।।

शाही परिवार करते थे,

पंच महल मे आवास।

व्यक्ति विचार विमर्श हेतु,

बना था दिवान-ए-खास।।

शाहजहां ने वस्तु में,

सफेद संगमरमर का उपयोग करवाया।

मुमताज की याद में,

आगरा में ताजमहल बनवाया।।

संगमरमर से रत्नजड़ित नक्काशी,

चारो ओर विस्तृत उद्यान।

आगरा में बने,

ताजतहल की है पहचान।।

बहुत सुन्दर और भव्य था,

शाहजहां का शाही आसन।

कोहिनूर हीरे जड़ित,

नाम था मयूर सिंहासन।।

जल स्त्रोतो से उद्यान में,

बहती थी पानी की धार।

जहांगीर ने उद्यान बनवाए,

निशांत, तंजौर और शालीमार।।

उद्यान के फव्वारों से,

निकलती थी सुन्दर झाग।

कश्मीर में निशांत पंजाब में तंजौर,

लाहौर में है शालीमार बाग।।

ताजमहल व लाल किला,

शाहजहा की याद दिलाते हैं।

राश्ट्रीस उत्सव के अवसर पर,

लाल किला से झण्डा फहराते है।।

औरंगजेब ने अपनी ईमारत,

औरंगाबाद में बनवाए।

गढ़मण्डला रत्नपुर के भवन,

मध्यकालीन कला श्रेणी में आए।।

-----oooooo-----